छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति

शिव कुमार बंजारे

सहायक प्रध्यापक, शास. नवीन महाविद्यालय,
नवागढ़, छत्तीसगढ़

सारांश

छत्तीसगढ़ भारत की हृदय स्थल है यहां की अपनी सामाजिक संस्कृतिक मान्यता है, यह प्रदेश कला, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व गौरवशाली अतीत से अत्यंत सम्पन्न है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति अद्वितीय और जीवंत है यहां के लोगो की हर सांस में संस्कृति रची-बसी है। अपनी सांस्कृतिक विरासत में समृद्ध है। यहां की लोकगीत, लोकनृत्य, लोक संगीत लोकनाट्य आदि को देखना सुनना अत्यंत आनंददायक है। यहां की संस्कृति पूरे भारतवर्ष में अलग है जो यहां चारो ओर देखा जा सकता है।

बीज-शब्द: सांस्कृतिक दृष्टि, प्राचीन गौरव, आदिवासी, जीवन निर्वाह, निष्कपट जीवन, धान का कटोरा, लोक गाथा, छत्तीसगढ़ी साहित्य, इतिहास और संस्कृति।

प्रस्तावना

“संस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ राज्य भारत की विभिन्न संस्कृतियों और समाजों का मिलन स्थल रहा है “¹ छत्तीसगढ़ गांवो का प्रदेश है। जिसे धान का कटोरा कहा जाता है, जो अपनी संस्कृति को अस्मिता के साथ संरक्षित किये हुए है। यहां की संस्कृति मानव मूल्यों के साथ भाव मूल्यों पर आधारित है। “यह प्रदेश मैकल, रामगढ़ और सिहावा की पहाड़ियों से घिरा हुआ है तथा महानदी और उसकी सहायक शिवनाथ, मांठ, खारून, जोंक और हसदो नदियों के जल से सिंचित है। इन नदियों के तट पर विभिन्न सभ्यताओं का उदय और विकास हुआ जिनके अवशेष बिखरे होने पर भी छत्तीसगढ़ की प्राचीन गौरव की झांकी प्रस्तुत करने में समर्थ है।”² “सांस्कृतिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ को एक ‘लघु भारत’ कहा जाता है। इस प्रदेश की सीमाएँ- उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश और मध्यप्रदेश की सीमाओं से मिलती है। इन छह प्रदेशों के सांस्कृतिक संपर्कों और कलाओं के आदान-प्रदान छत्तीसगढ़ को भारत की संस्कृतिक

एकता के वैभवशाली प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया है।”³ स्थानीय मूल निवासियों को सरलता से विस्थापित कर शासन, सत्ता और सांस्कृतिक फैलाव को विस्तार दिया जाना सरल भी रहा है। छत्तीसगढ़ प्रांत की सीमाएं अलग-अलग भाषा के प्रदेशों से मिलने के कारण संस्कृतिक सम्पर्क, कला आदान-प्रदान, मेल जोल स्वाभाविक भी था।”⁴

इस भूमि पर महान संतो, महापुरुषों, कलाकारों, कवियों, को जन्मा है। जिनकी गाथा आज निरन्तर सुनाई देता है। यह भू-भाग दुर्गम पहाड़ों और जंगलो से घिरा हुआ है। रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, भाषा-बोली के लिए जाना जाता है। “छत्तीसगढ़ में निवास करने वाले आदिवासी विविध युगो की आदिम सभ्यता का प्रतिनिधित्व करते है।”⁵ यह संस्कृति भी आदिम समय से जुड़ा हुआ है।” इस भूमि पर चारो तरफ जंगल है तो यहां खनिज सम्पदा से भरा हुआ है, लोहा, कोयला, हीरा, बाक्साइट, जैसे अतुल्य खनिज है वही मध्य मैदानी भाग

उपज जिसके कारण छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। “ धन-धान्य, हरहाराती वन्य प्रकृति से उपजी परम्परा और निष्कपट जीवन निर्वाह में प्रस्तुतित हुई संस्कृति में जी रहे छत्तीसगढ़ीयों का हर दिन एक पर्व है।”⁶ “छत्तीसगढ़ प्रकृति और संस्कृति दोनों दृष्टियों से अनुपम है।”⁷

शोध-विस्तार

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही संस्कृति का विकास हुआ है। जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होते गया है वैसे-वैसे संस्कृति का विकास होते गया। संस्कृति परिवर्तनशील है जो समय के साथ बदलता जाता है। यह नदी की धारा के समान है जो निरन्तर बहता रहता है और अपने साथ युगीन संस्कृति को लेकर चलता है। जिस प्रकार नदी अपने धारा के कई चीजों को किनारे छोड़ देता है ठीक वैसे संस्कृति कई चीजों को छोड़ देता है और नवीन चीजें जोड़ते आगे चला जाता है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में मनुष्य ने अनेक उत्थान-पतन देखे, मानव जीवन में नये अनुभव, मूल्य, संस्कार, सभ्यता सीखे तो कुछ पिछे छूट गया। फिर भी आज हम अपनी संस्कृति को वाचिक और लिखित परम्परा के माध्यम से सहेजे हुए हैं। जो हमें प्रेरणा प्रदान करता है और अपनी संस्कृति से बांधे रखता है।

“आदिम संस्कृति के साथ आर्य, द्रविण, बौद्ध, जैन, सिक्ख, इस्लाम, इसाई आदि की संस्कृति धारा भी छत्तीसगढ़ी समुंदर में समायी है। यहां की लोक साहित्य कला और संस्कृति में बदलते मौसम की अंगलाई वियोग-संयोग की अनुपम छटा ने खेत-खलिहान की हरियाली पराक्रम सौन्दर्य की गाथा मेधा अन्वेषिणी प्रहेलिकाए, जनकला हाना, पर्व-उत्सव के चटख रंग गुरतुर बोली में छत्तीसगढ़ के पावन माटी में उपत्यकाओं में कल-कल निनादिनी झरनों में मृगण्य पशु पक्षियों में रत्नगर्भी खदानों में बन प्रान्तरो में गवहर के अंधकार में शैलचित्रों में छत्तीसगढ़ की गौरवशाली परम्परा उद्बुद्ध होती है।”⁸

मनुष्य संस्कृति को जन्म देता है और संस्कृति मनुष्य को संस्कार देती है। कर्म, चिंतन के बल पर हर क्षेत्र में अपनी सामूहिक प्रतिभा के बल पर लोक अपना जो

(श्रेष्ठतम) उच्चतम उपलब्ध कराता है, वही लोक संस्कृति है। आज छत्तीसगढ़ की संस्कृति को सहजकर पल्लवित किया जा रहा है। संस्कृति का अनुपम संग्रह राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ को एक नया आयाम प्रदान कर रहा है। संस्कृति के विकास में छत्तीसगढ़ के वनप्रान्तरों का विशेष योगदान है। लोक संस्कृति में केवल साहित्य नहीं आता बल्कि लोकगीत, लोकनृत्य, लोक नाट्य, हस्तशिल्प, लोककथा, भाषा, बोली, आभूषण, लोक संगीत, पर्व, त्यौहार आदि भी आते हैं।

साहित्य संस्कृति को सहेजकर रखता है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति भी यहां की लोक साहित्य में संग्रहित है। लोक संस्कृति दो तरह के माने जाते हैं पहला वाचिक यानी मौखिक साहित्य जो परम्परागत लोकगीत, लोककला, लोकगाथा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मौखिक से पहुंचाता है। मौखिक होने के कारण कई तरह की बदलाव समय के साथ होता जाता है। भाषाई परिवर्तन सर्वाधिक होता है। दुसरा होता है लिखित, जिसे सृजनात्मक साहित्य भी कहते हैं। यह लिपिबद्ध होता है। कविता, कहानी, नाटक गीत आदि को सहेज कर रखा जाता है।

छत्तीसगढ़ में अनेक ऐसे लोकगीत, लोककथाएं, पहले लोक नृत्य, झांकियां जो वाचिक और सृजित दोनों तरह के साहित्य में जीवित हैं, जो हजारों वर्षों से चली आ रही हैं। छत्तीसगढ़ में लोकगीत प्राचीन समय से चली आ रही हैं। लोकगीत की रचना किसने की यह प्रायः अज्ञात होता है। लोकगीत तो मानव के हृद्य से सहज रूप से स्वीकृत होता है। यह जन जीवन से घुला-मिला होता है, जो हर समय, मौसम, वर्षा, पर्व, त्यौहार यहां गया जाता है जिसे हम अपने हर अवसर पर कोई न कोई लोकगीत गाते हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का क्षेत्र बहुत व्यापक है। जिसमें पर्व गीत है सबनाही गीत, छेरछेरा गीत, नागमत गीत कार्तिक गीत, फाग गीत, वारामासी गीत, से वे गीत है जो किसी समय विशेष में गाया जाता है जिसे ऋतु गीत कहा जाता है। जैसे छेर-छेरा गीत के पौष माह की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। बच्चे-बूढ़े घर-घर जाकर अनाज

मांगते हैं। कहा जाता है अनाज दान करने से अनाज में वृद्धि होती है।

“छेरिक छेरा, छेर छेरा, बरकतीन छेर-छेरा।

माई कोठी के धान ल हेर-हेरा ॥”

धार्मिक गीत, माता सेवा, भजन गीत, गौरागीत ये वे गीत हैं जो धार्मिक अयोजनों में गाया जाता है। नवरात्रि पर्व साल में दो बार मनाया जाता है। एक शरद नवरात्रि दुसरा बसन्त नवरात्रि उस वक्त पूरे छत्तीसगढ़ में जसगीत गया जाता है-

“मोर चले महामाई उत्तख लेबर बर हो

खोखमा फूल के हाथ बिजुलिया”

पर्व गीत- सुवा, भोजली, राउत नाचा, सैला, डंडा, मड़ई करमा आदि ऐसे गीत हैं जो पर्व में ही गाया जाता है। जैसे सुवा गीत दीपावली पर्व के पूर्व कार्तिक कृष्णपक्ष में महिलाएं एक टोकरी में मिट्टी के दो तोते सजाकर रखती हैं और घर-घर जाकर समूह में उस सुवा के चारों ओर घुम-घुम कर सुवागीत गाते हैं।

“तरी नरी नहा नरी ना नरी नाना रे सुअना”

जातिय गीत - गोंडवाना गीत, पंथी गीत, देवार गीत, बसदेवा गीत बांस गीत, बारगीत ये सभी गीत जातिय विशेष द्वारा गाया जाता है। जिसमें पंथी गीत, सतनामियों द्वारा किसी भी समय या पर्व में गाया जाता है। -

“मंदिरवा में का करे जइबो

अपन घर के देवता ला मनइबो”

इसी प्रकार बांस गीत, यादव जाति के लोग हि गाते हैं तो वहीं देवार गीत देवार जाति के लोग हि गाते हैं। मनोरंजनात्मक गीत- ददरिया, लोरीगीत, गम्मत गीत आदि जो मनोरंजन के लिए गाया जाता है और प्राचीन समय से गाते आ रहे हैं। ये गीतें छत्तीसगढ़ की आत्मा में बसा हुआ है।

गाथात्मक गीत, भरथरी, पंडवानी, लोरिक चंदा, सरवन की गीत आदि ये गीते छत्तीसगढ़ की लोक गाथा से जुड़ा हुआ है। जिसमें पंडवानी महाभारत की कहानी को छत्तीसगढ़ी में गाया जाता है।

लोक संगीत - छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति लय प्रधान है जिसमें स्वच्छता होती है। हर उत्सव के अवसर पर आनंदमय वातावरण के लिए मांदर, झांझ, मंजीरा टिमटिमी, नंगाड़ा, तम्बूरा, बीम, सारंगी, ढोलक आदि से हमारी भावों को उदित करता है। और अनुठा लोक संगीत का मिश्रण होता है।

लोक नृत्य एवं नाच - पूरे भारतवर्ष में छत्तीसगढ़ी लोकनृत्य का विशेष महत्व है। छत्तीसगढ़ी संस्कृति में नृत्य का बहुत महत्व है। छत्तीसगढ़ी संस्कृति में नृत्य के भाव को प्रदर्शित करता है। यहाँ के लोकनृत्य प्राणमय होते हैं जिसमें प्रमुख हैं- पंथी नृत्य, करमा नृत्य, गौर नृत्य, ददरिया नृत्य, मांडरी नृत्य, सरहुल नृत्य गेंडी नृत्य, धुरवा नृत्य, गेंडी नृत्य, चैंदनी नृत्य, सैला नृत्य, गंवार नृत्य, परब नृत्य, गौर नृत्य, ढाँढल नृत्य, दषहरा नृत्य, दोरला नृत्य, गेंडी नृत्य, बिलमा नृत्य, परघोनी नृत्य, फाग नृत्य, थापटी नृत्य, ककसार नृत्य, हलकीपाटा नृत्य, राउतनाचा आदि सभी नृत्य छत्तीसगढ़ की आन-बान-शान हैं।

लोक नाट्य - लोक नाट्य छत्तीसगढ़ की विविध संस्कृतियों में से है प्रमुख लोक नाट्यों में दहिकांदो, रहस भतरानाट, नाचा, खम्ब स्वांग, माओपाटा, गम्मत आदि प्रमुख हैं। छत्तीसगढ़ के लोकनाट्य हमें हमेशा आनंदित करते हैं।

लोक गाथा- लोक गाथा छत्तीसगढ़ की संस्कृति और इतिहास का महत्वपूर्ण अंग है। यहाँ की लोकगाथा अत्यंत समृद्ध रही है। छत्तीसगढ़ी साहित्य में गाथा युग को स्वर्णयुग कहा रसप्रधान अध्याय है। प्रमुख लोकगाथाओं में पंडवानी, भरथरी, लोरिक चंदा, डेलामारू आदि हैं।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ नवीन प्रदेश है, जो 1 नवम्बर 2000 को मध्यप्रदेश से अलग होकर अस्तित्व में आया। यह प्रदेश

अपने विशिष्ट संस्कृति के लिए विश्व प्रसिद्ध है। आदिकाल, रामायण काल, महाभारत युग की अवशेष आज भी छत्तीसगढ़ की इस भूमि पर यत्र-तत्र बिखरे मिल जायेंगे। स्वतंत्राकाल से लेकर आज तक यहां की महान और गौरवशाली संस्कृति छत्तीसगढ़ वासीयों के आत्मा में समाहित है। यहां की विवहता पूर्ण संस्कृति लोग जन

जीवन में रचा बसा है। प्रकृतिक सम्पदा से भरा यह प्रदेश लोकमानस की व्यापक ज्ञान व अनुभव व चेतना का ही परिणाम है। जो यहां की जन जीवन को संतुलित, संयमित, सफल और सार्थक बनाती है और यही यहां की विशेषता है।

संदर्भ -

1. डां संजय, छत्तीसगढ़ इतिहास और संस्कृति, अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2015, पृ. 307
2. मिश्रा, रमेन्द्र नाथ छत्तीसगढ़ के दुर्लभ ऐतिहासिक स्रोत, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्करण 2017- पृ. 15
3. शुक्ल, हिरालाल, समग्र छत्तीसगढ़ में संकलित, छत्तीसगढ़ का संस्कृतिक स्वरूप, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्करण 2017 पृ. 546
4. अलंग, डां संजय, छत्तीसगढ़ इतिहास और संस्कृति, अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015, पृ. 307
5. वही, पृ. 556
6. बेहार, रामकुमार, छत्तीसगढ़ का इतिहास, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्करण 2016, पृ. 307
7. वही, पृ. 306
8. दासे, श्रीमति पुष्पांजली, एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, शास. पालूराम धनानिया वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय रायगढ़